ISSN 2456–4753

प्लूटो

अंक 4 वर्ष 2 अक्टूबर - नवम्बर, 2017

मूल्य ₹60

भुलेरी देवी

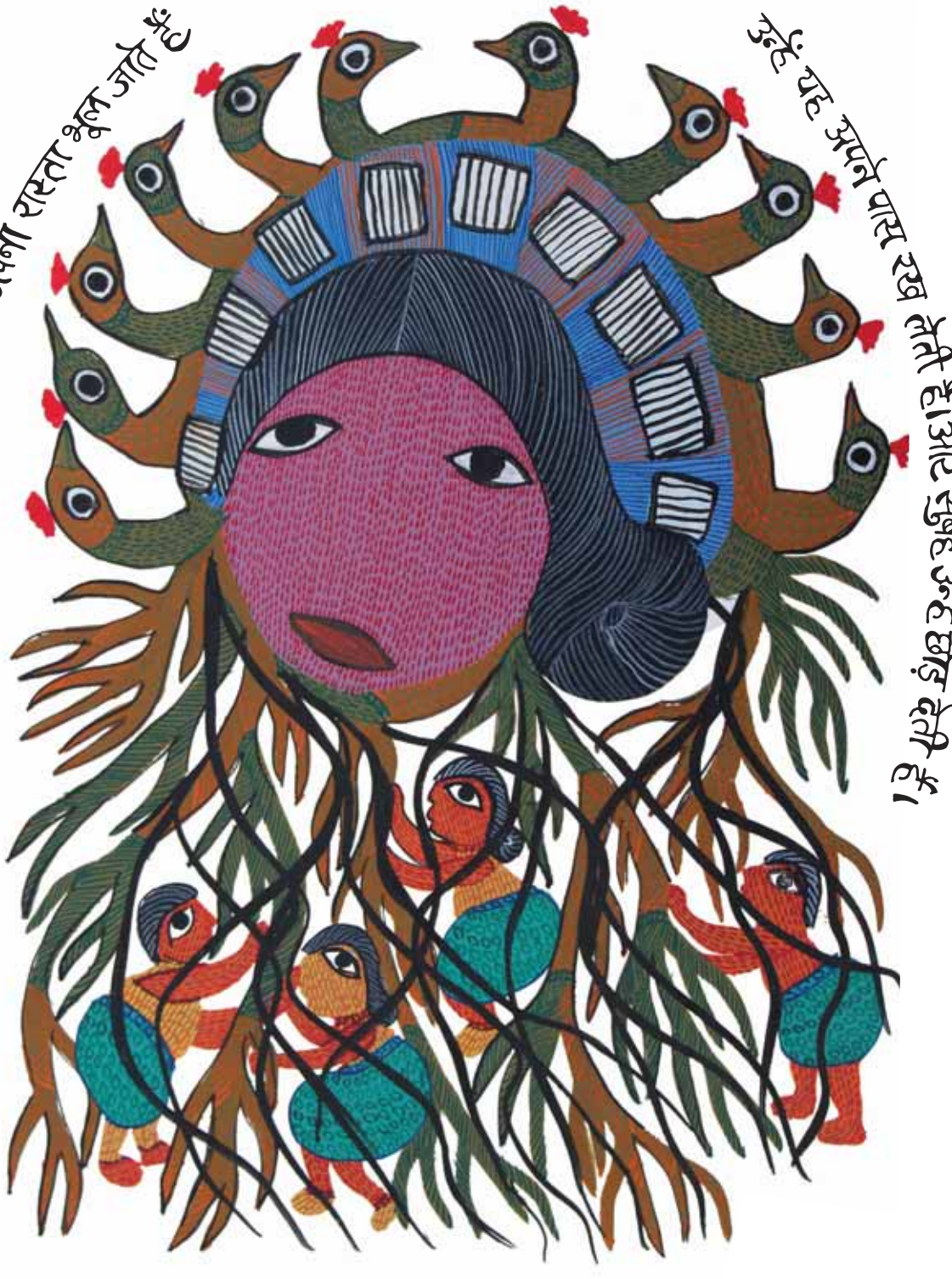

यह कहानी हमें दुर्गा बाई ने सुनाई है। मण्डला में उनके गाँव में भुलेरी देवी की कहानी बहुत सुनी-सुनाई जाती है। इसके चित्र भी दुर्गा बाई ने ही बनाए हैं।

फूल घड़ी

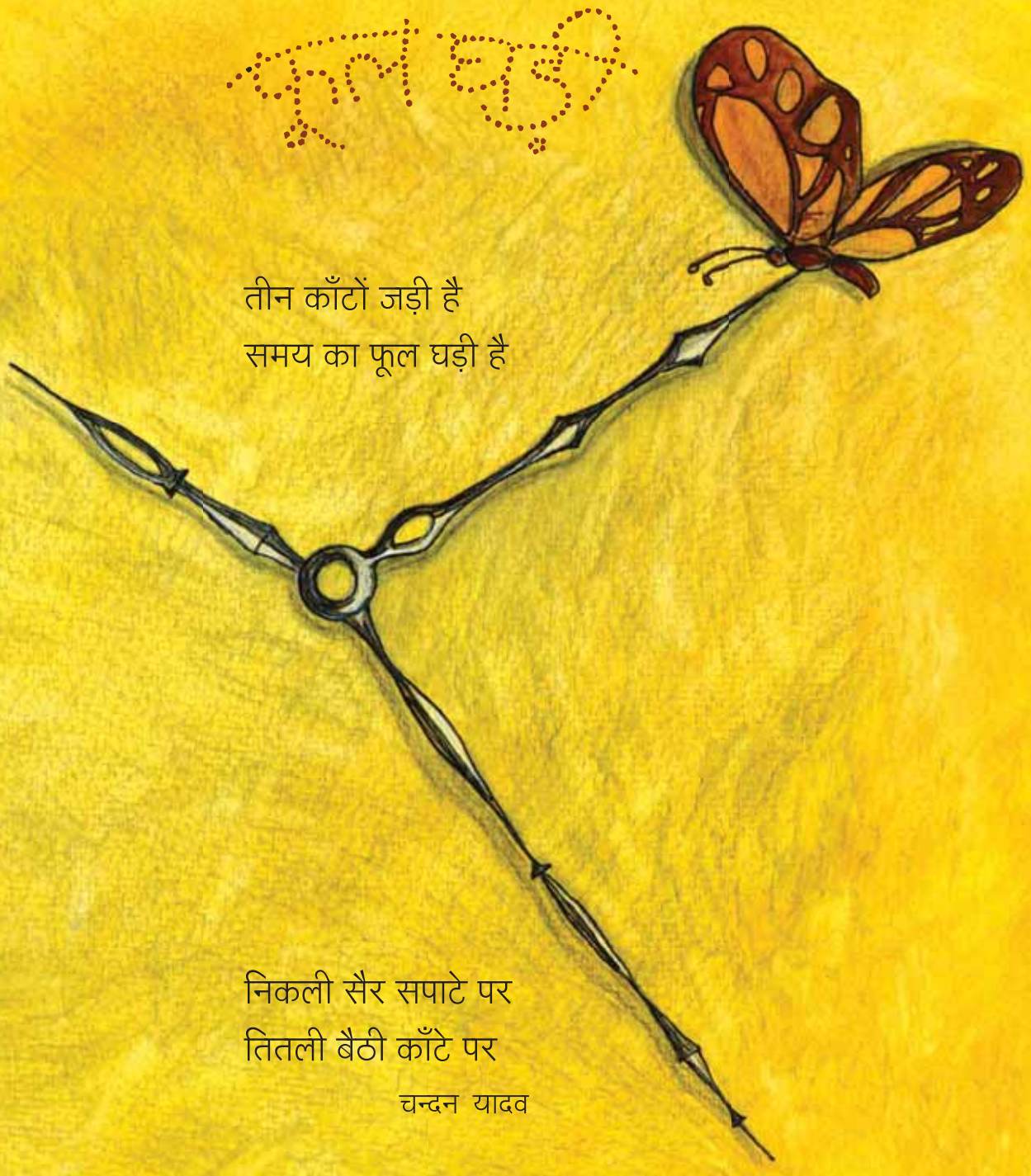

तीन काँटों जड़ी है
समय का फूल घड़ी है

निकली सैर सपाटे पर
तितली बैठी काँटे पर

चन्दन यादव

चित्रः विजेन्द्र सिंह

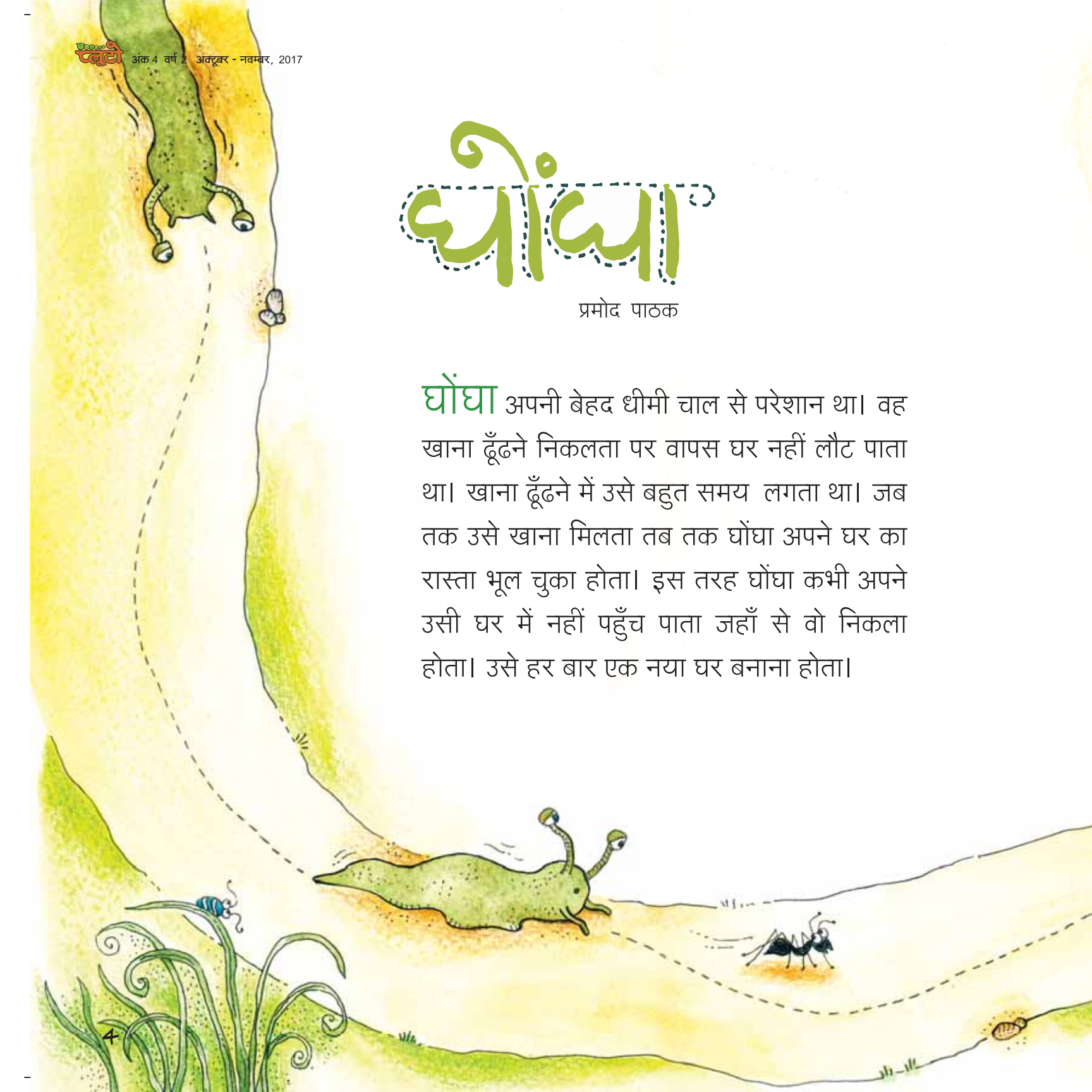

घोंघा

प्रमोद पाठक

घोंघा अपनी बेहद धीमी चाल से परेशान था। वह खाना ढूँढने निकलता पर वापस घर नहीं लौट पाता था। खाना ढूँढने में उसे बहुत समय लगता था। जब तक उसे खाना मिलता तब तक घोंघा अपने घर का रास्ता भूल चुका होता। इस तरह घोंघा कभी अपने उसी घर में नहीं पहुँच पाता जहाँ से वो निकला होता। उसे हर बार एक नया घर बनाना होता।

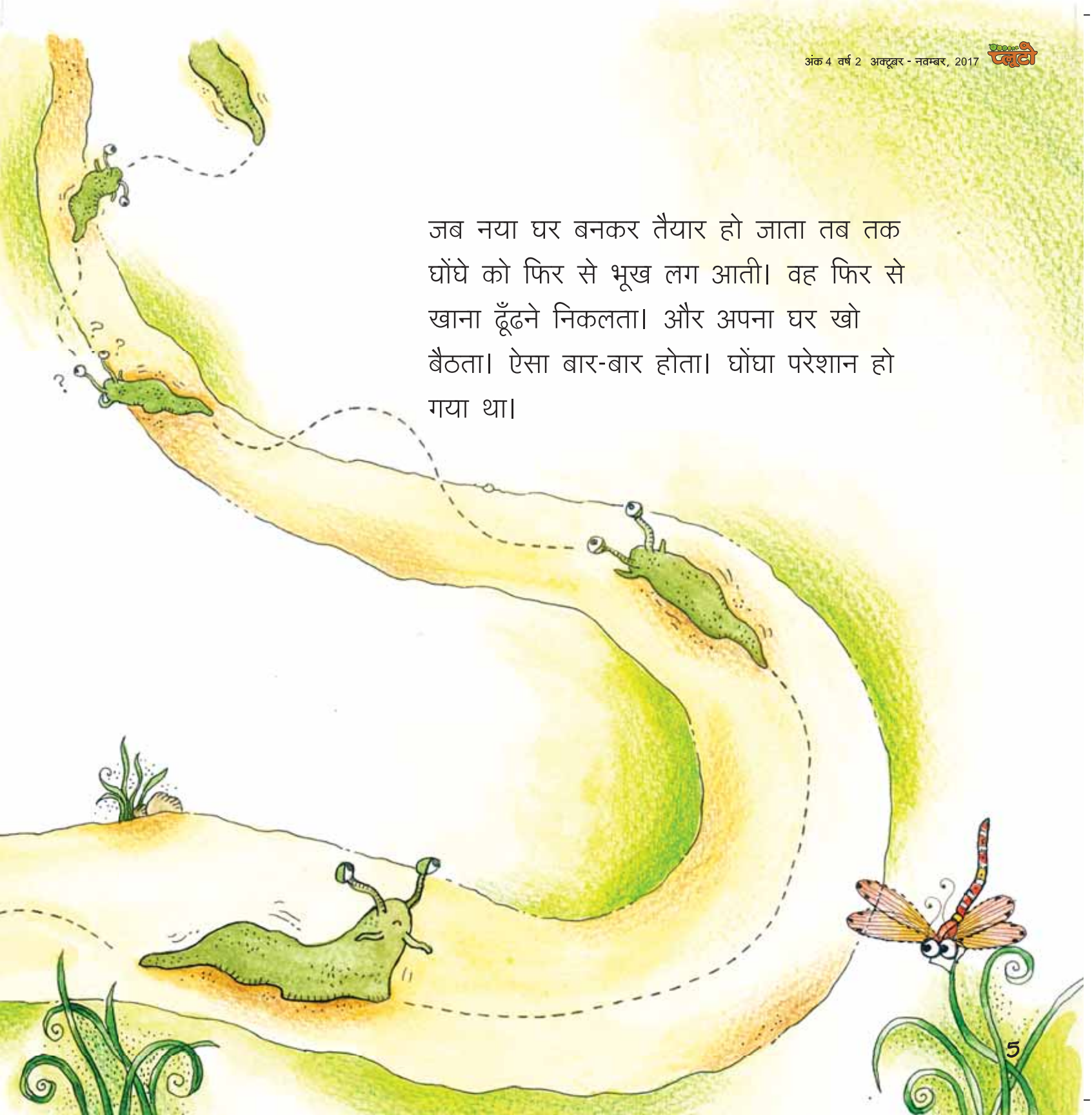

जब नया घर बनकर तैयार हो जाता तब तक घोंघे को फिर से भूख लग आती। वह फिर से खाना ढूँढने निकलता। और अपना घर खो बैठता। ऐसा बार-बार होता। घोंघा परेशान हो गया था।

एक दिन उसने तय कर लिया कि अब वह अपना घर साथ लेकर ही चलेगा।

तब से घोंघा अपना घर अपनी पीठ पर उठाए चलता है।

चित्रः प्रोइती रॉय

बकरी के साथ...

श्याम सुशील

बकरी के साथ
मुन्नी करे बात

बकरी बोले मेंsss
मुन्नी करे ऐंsss

बकरी कान हिलाए
मुन्नी गाना गाए

छोटी-सी बकरी
मुन्नी ने पकड़

चित्रः भार्गव कुलकर्णी

टूटी पेंसिल

प्रयाग शुक्ल

टूटी पेंसिल
छिल छिल छिल
गई हवा में
वो घुल मिल
छोड़ गई एक
काला तिल।

चित्रः प्रोइती रॉय

इस्माइल आखिर क्यों भागा?

नेहा सिंह

इस्माइल सर पर पैर रख भागा, ऐसा भागा....
ऐसा भागा कि सड़क पर एक ने पूछा,
"क्या हुआ? भूत देख लिया क्या?"
"नहीं" बोल कर इस्माइल भागा।
दूसरे ने पूछा, "क्या हुआ? पुलिस पीछे पड़ी है क्या?"
"नहीं" बोल कर इस्माइल भागा।
तीसरे ने पूछा, "रेस की प्रैक्टिस कर रहे हो?"

“ट्रेन पकड़ने जा रहे हो?”
“किसी का पीछा कर रहे हो?”
“नहीं” बोलकर इस्माइल भागा
और पेड़ पर चढ़ गया।
सबने पूछा, “क्या हुआ?”
इस्माइल पेड़ पर से चिल्लाया
“घर पर करेले की सब्ज़ी बनी है।”

चित्रः तापोशी घोषाल

दवा खाना मगरमच्छ का है। यह चिड़िया यहाँ मगरमच्छ के दाँतों में फँसा खाना खाने आई है। इससे मगरमच्छ के दाँतों की सफाई हो जाएगी और चिड़िया को पेट भर खाना मिल जाएगा।

तो इस मगरमच्छ के दवा खाने की डॉक्टर यह चिड़िया है।

तुम अपने दाँतों में फँसे खाने को
किस चिड़िया से निकलवाना चाहोगे?

दाँतों में दवा खाना...

चित्रः मनोज गढ़पाले

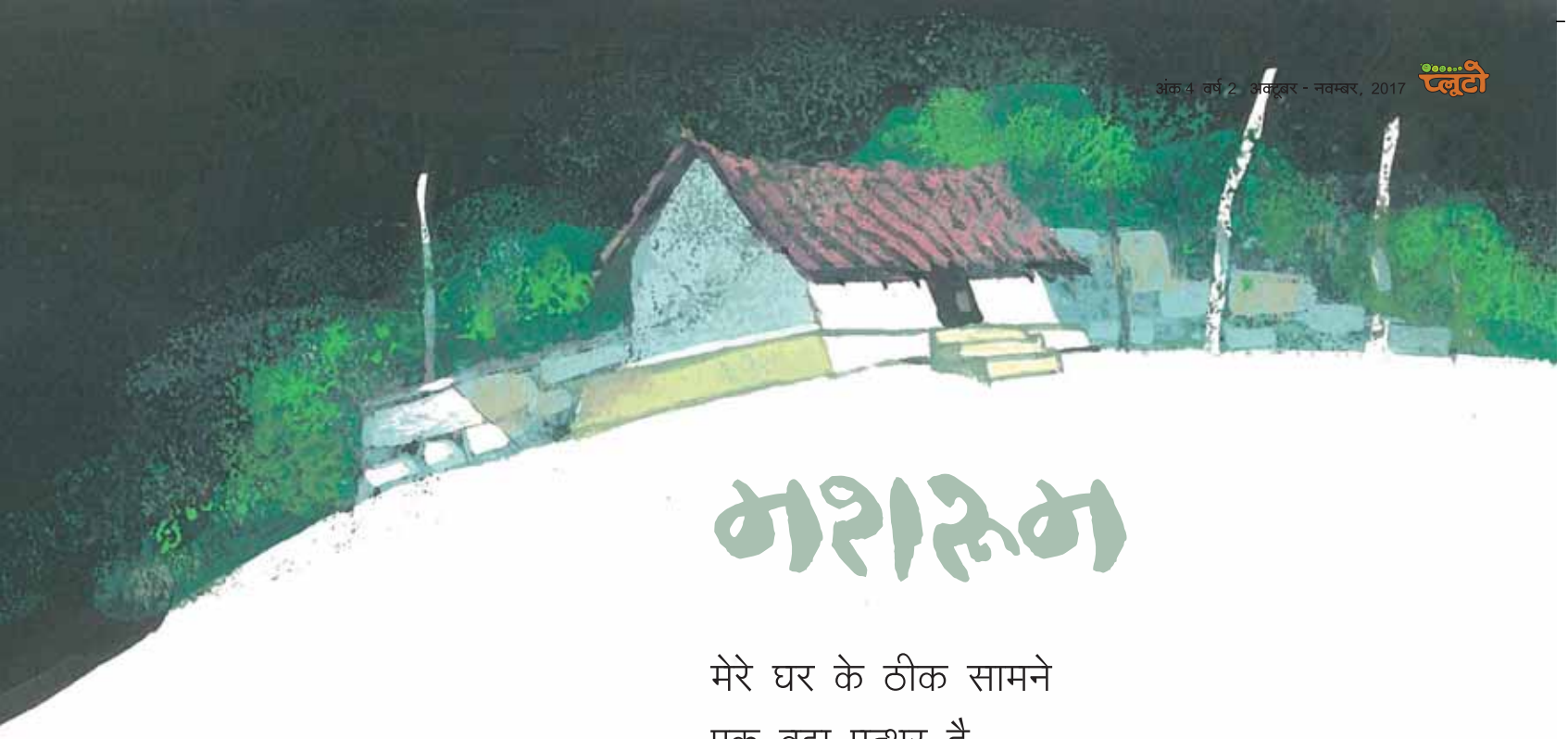

मशरूम

मेरे घर के ठीक सामने
एक बड़ा पत्थर है
इस पत्थर के नीचे इक
काले कीड़े का घर है।

वहाँ तीन सूखे पत्ते हैं
मिट्टी गीली गीली
एक लकड़ी के टुकड़े पर
मशरूम उगी है पीली

चित्रः देबब्रत घोष

AY ज़रा देख K चलो

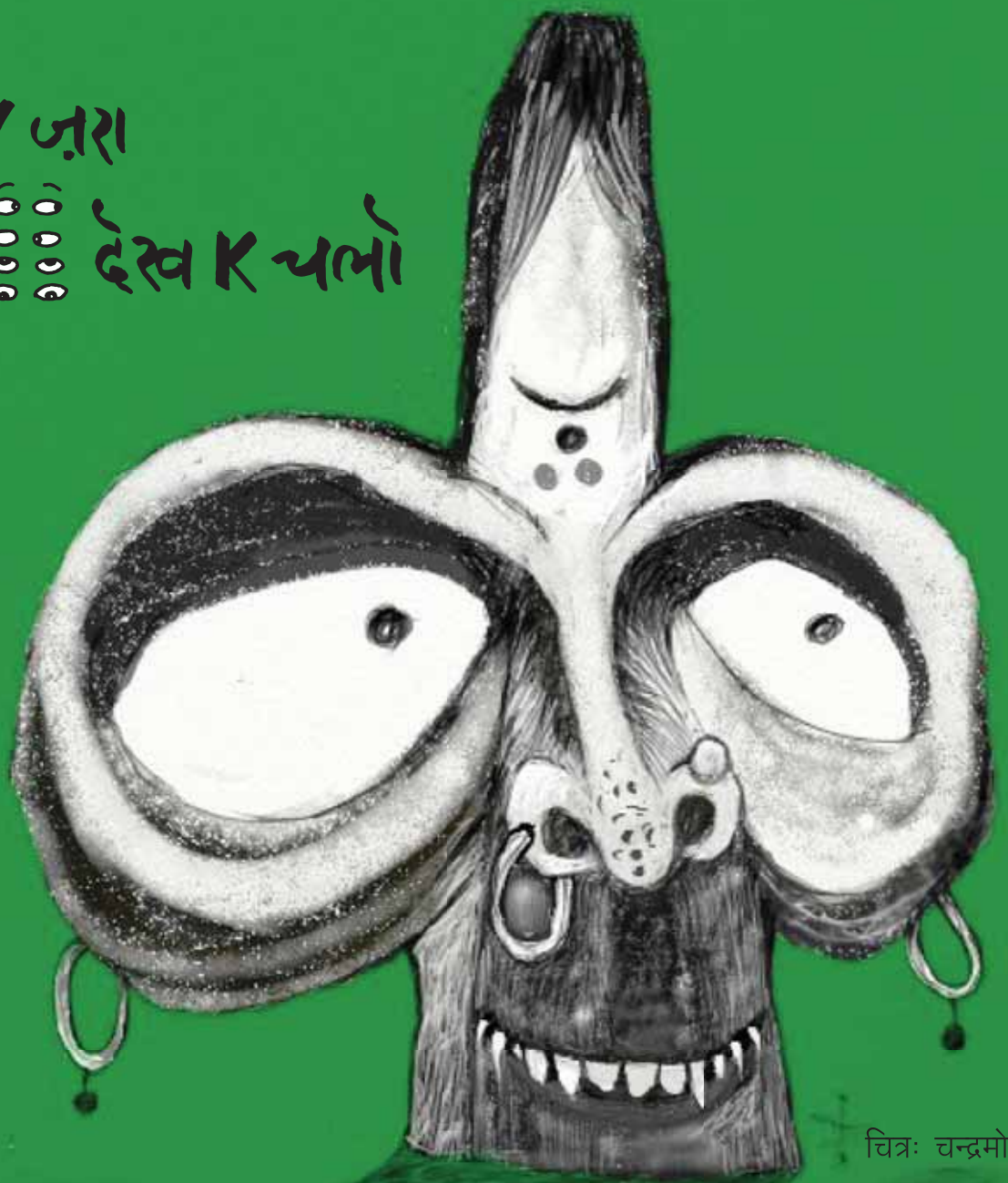

K जा
जा K
K ला
ला K
K खा
खा K
सो जा
जा K

चित्रः चन्द्रमोहन कुलकर्णी

तुम L का चेहरा बनाना चाहोगे?
जो बनाओ उसे हमें ईमेल या डाक से भेज दो।

यह है पार्थ वीर सिंह का K।
पार्थ सरदार पटेल स्कूल,
नई दिल्ली में चौथी में पढ़ते हैं।

कुछ बोल चाँद! ओ, गोल चाँद!!

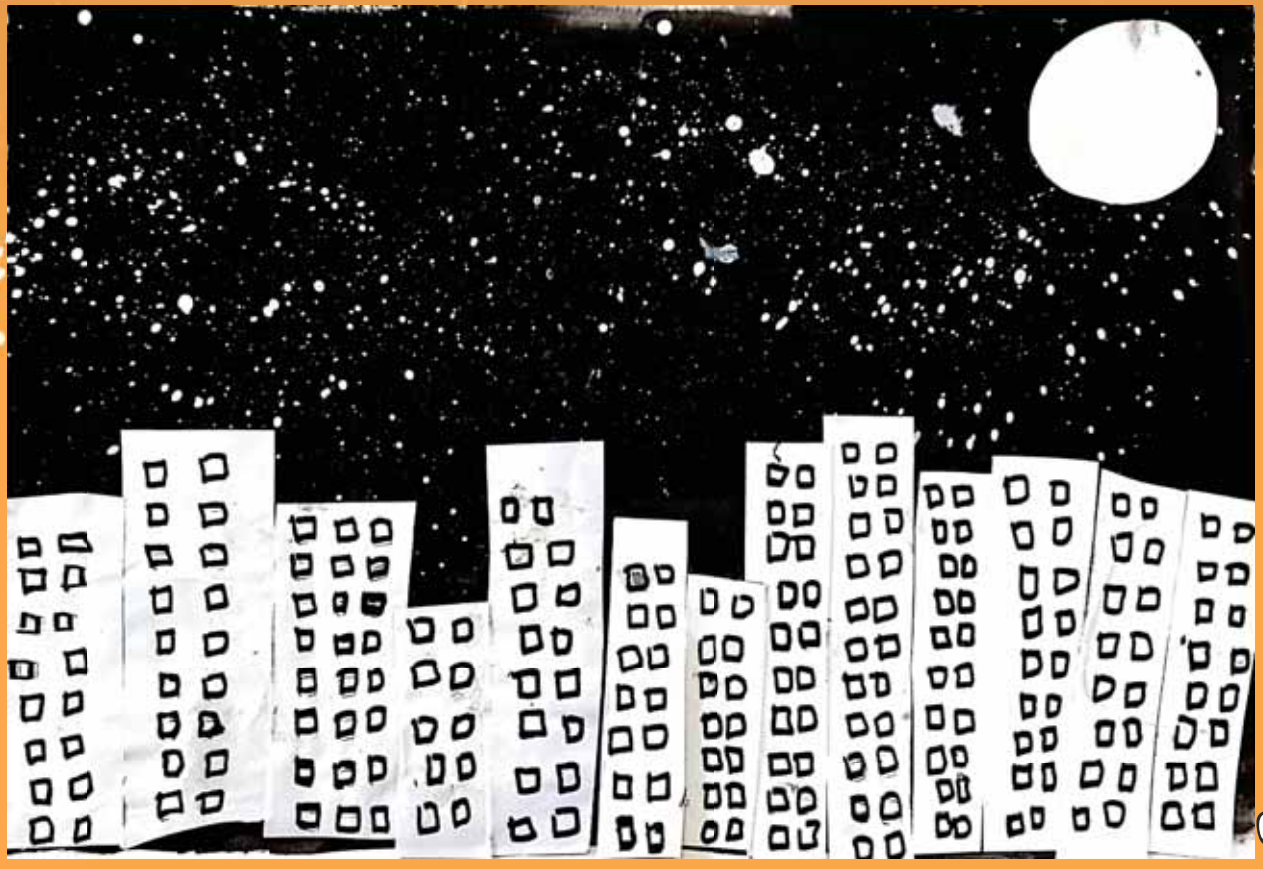

रिशी राज शुक्ला, चौथी, सेंट फ्रांसिस स्कूल, लखनऊ

आपका गाना गाना मेरा गाना टर्राना?

चन्दन यादव

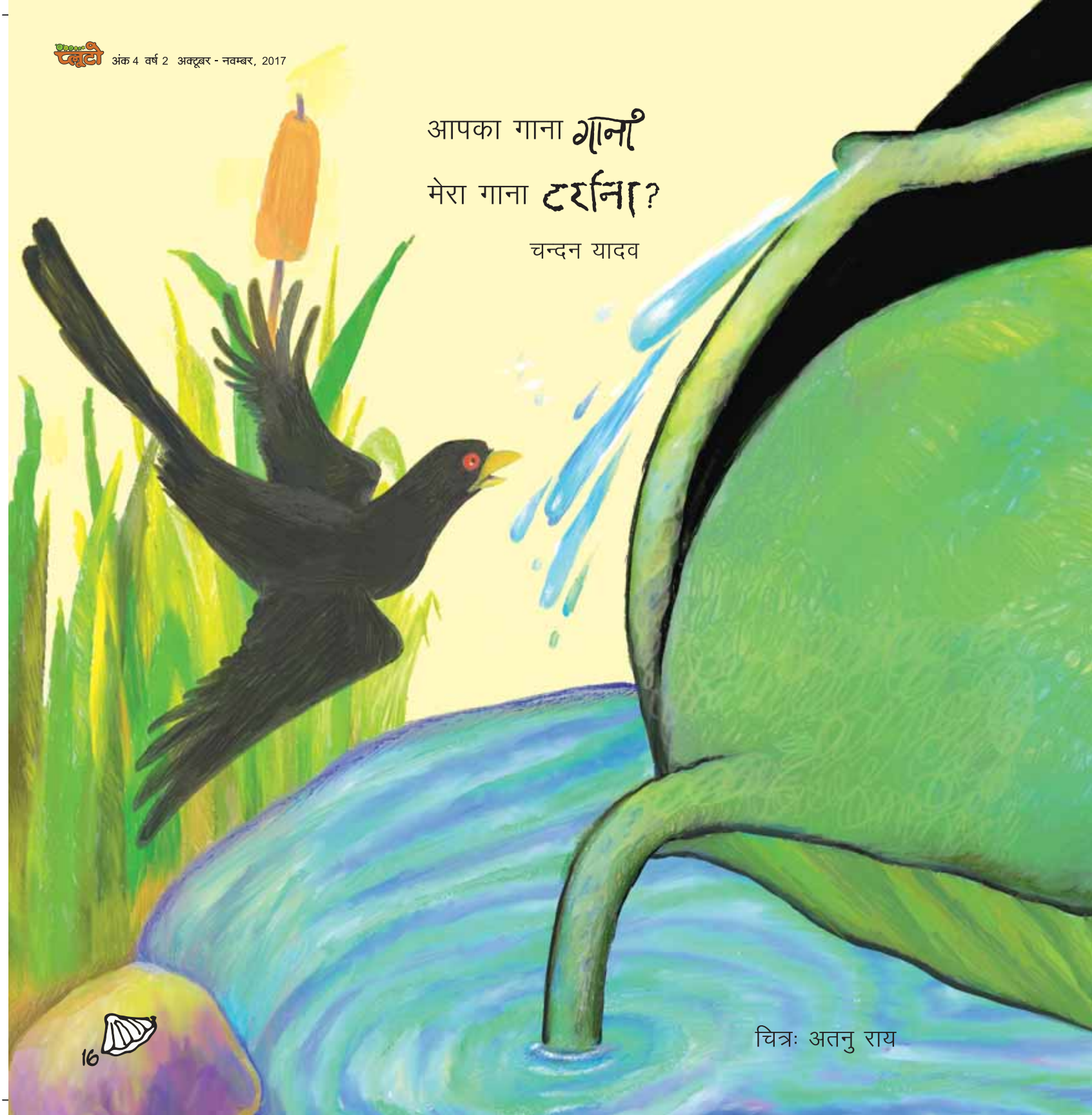

चित्रः अतनु राय

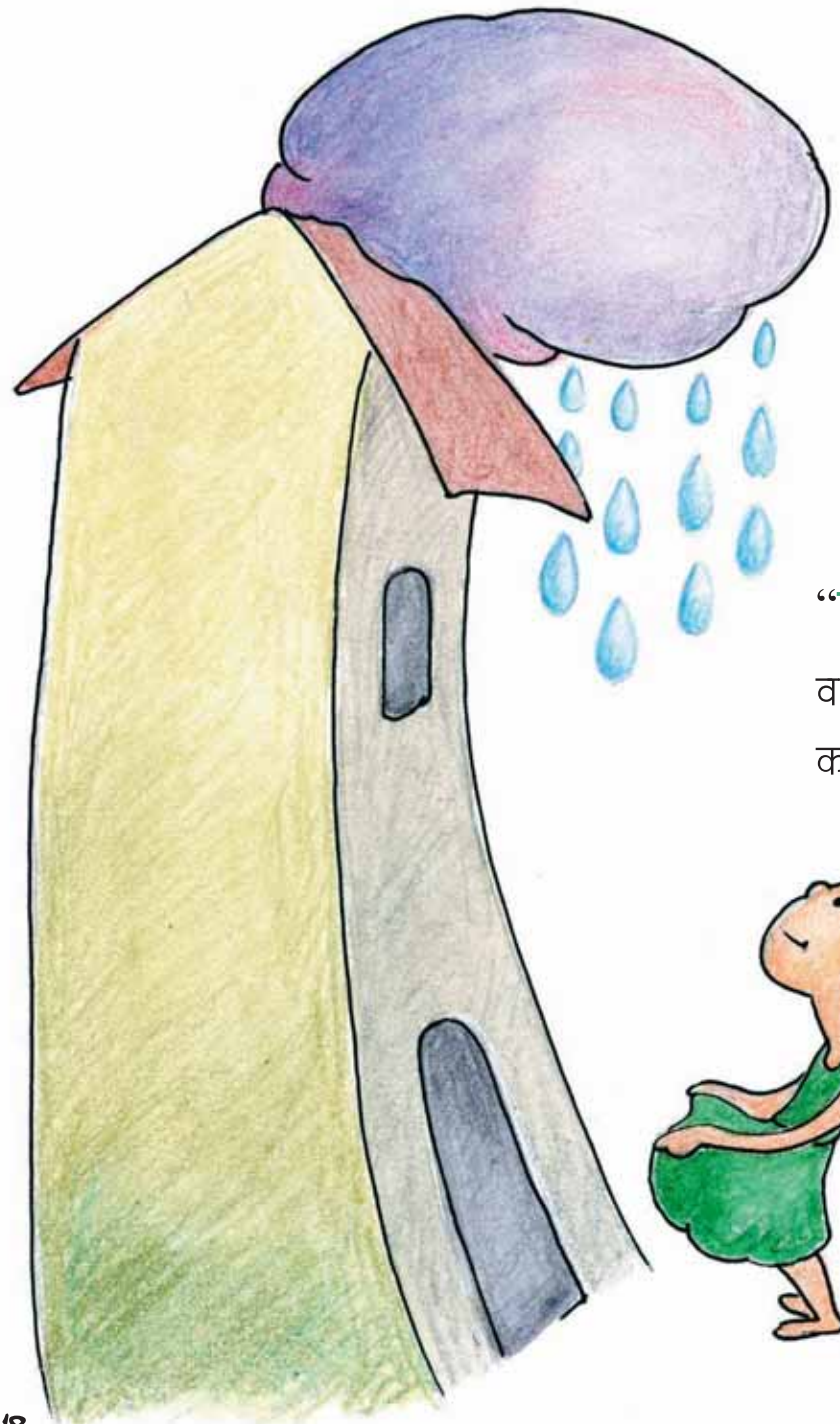

मेरा घर

माधुरी पुरन्दरे

"मेरा घर इतना.... नहीं इतना ऊँचा है।" वह अपने पंजों पर खड़ी होकर अपने हाथों को खींच-खींचकर घर दिखा रही थी।

मैंने पूछा, "घर ऊँचा हो तो क्या होता है?"

"पानी से लबालब बादल छत पर रहने आता है। उस बादल से कांच जैसी बड़ी-बड़ी बूँदें गिरती हैं। मैं उन बूँदों को इकट्ठा करके उनकी माला बनाती हूँ। फिर अपनी खिड़की पर उसे बन्दनवार की तरह सजा देती हूँ। सुबह हवा आती है तो बूँदों की माला हिलती है। और उसमें से किन किन किन जैसी आवाज़ आती है। तो मैं जाग जाती हूँ। "

मैंने कहा, "अरे वाह! फिर तो हमें भी तुम्हारा घर दिखाओ।"

चित्रः माधुरी पुरन्दरे

मम्मी का स्कूटर

नेहा सिंह

स्कूटर पे निकली मम्मी की सवारी
मम्मी है हलकी और हैलमेट है भारी
पछाड़ा है ट्रक को
पछाड़ी है लॉरी
ऐसी दबंग है मम्मी हमारी
कि स्कूटर भी समझे है खुद को फरारी

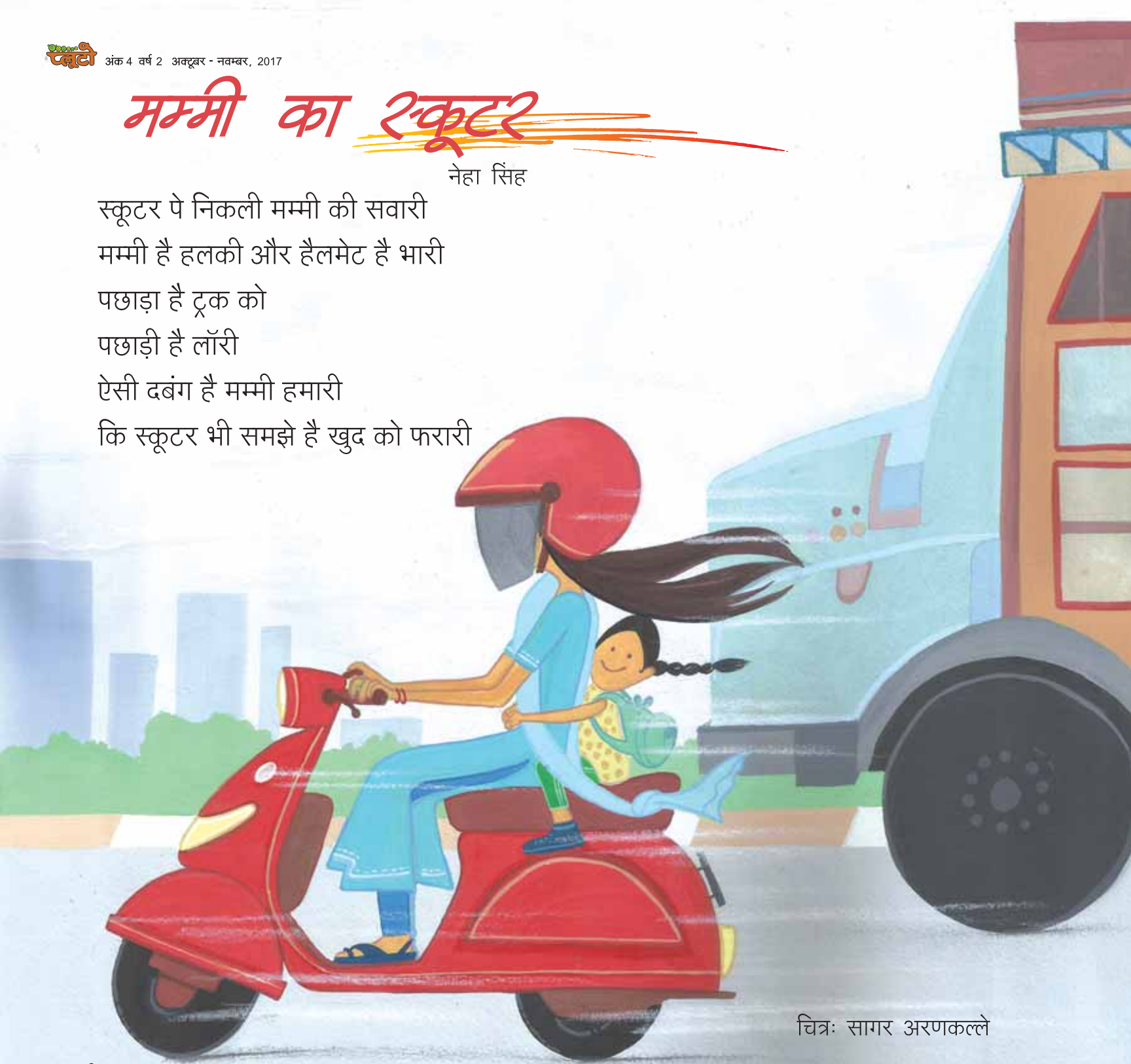

चित्रः सागर अरणकल्ले

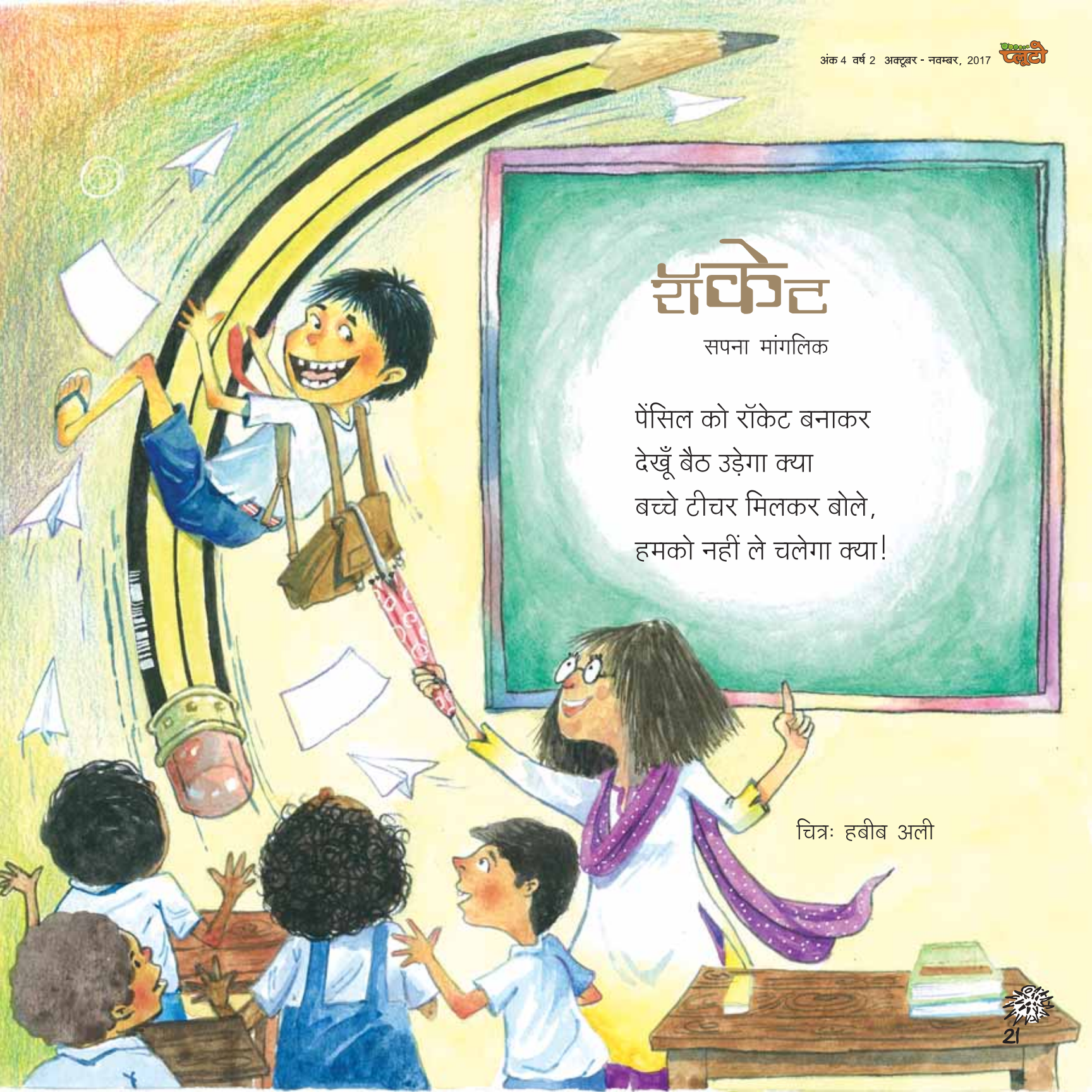

रॉकेट

सपना मांगलिक

पेंसिल को रॉकेट बनाकर
देखूँ बैठ उड़ेगा क्या
बच्चे टीचर मिलकर बोले,
हमको नहीं ले चलेगा क्या!

चित्रः हबीब अली

नींद

शशि सबलोक

उस दिन दो कहानी सनने के बाद भी सना और कहानी सुनाने की ज़िदद् करने लगी।

अम्मी को नींद आ रही थी। वे बोलीं, “कल तीन कहानियाँ सुना दूँगी। अभी नींद आ रही है, सना।”

“कहाँ से आ रही है?”

सना बोली

“आ रही है बस।”

बोलो तो, “कहाँ से आ रही है। अन्दर से या बाहर से?”

“अन्दर से।”

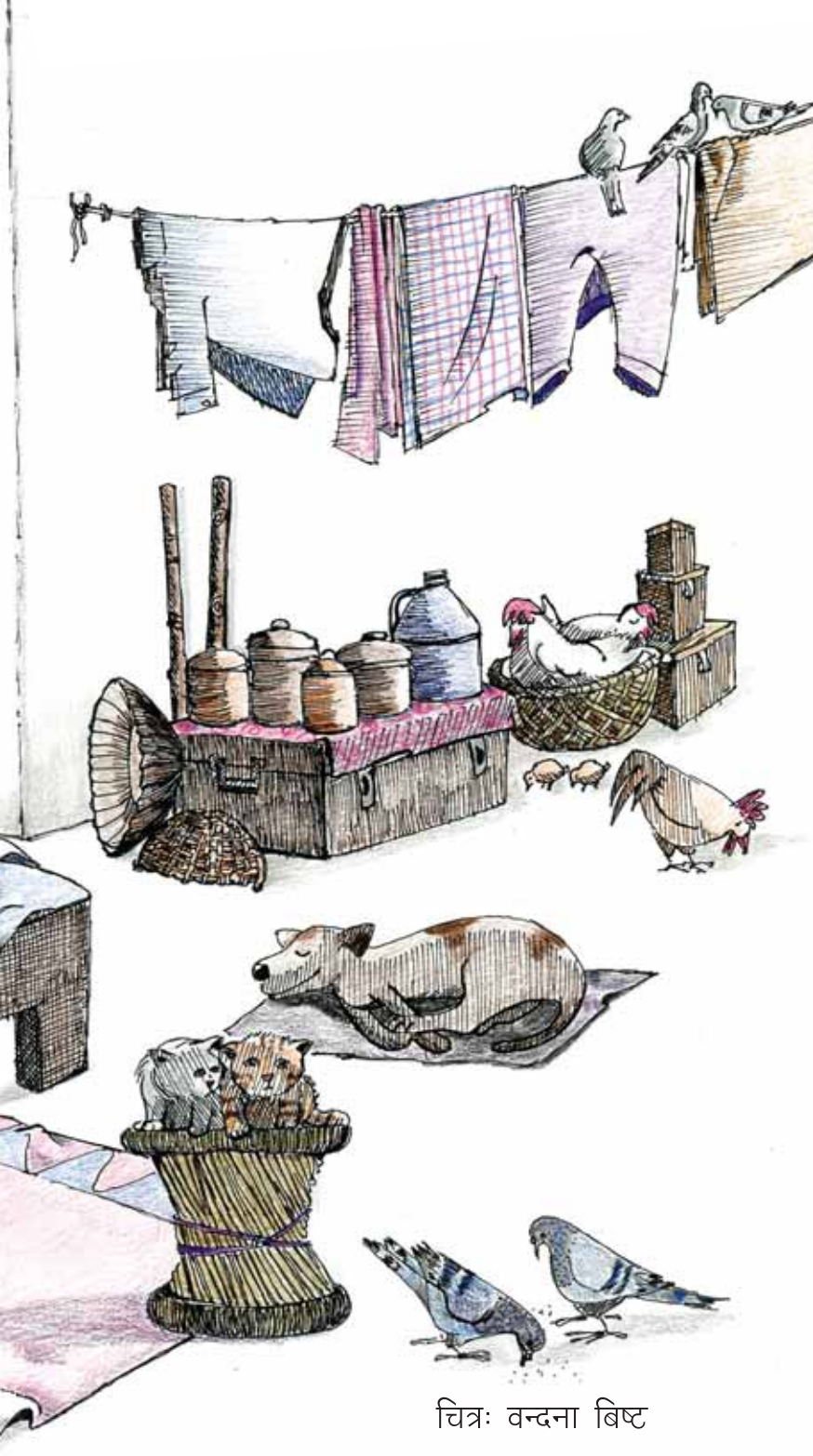

चित्रः वन्दना बिष्ट

"तो नींद जब अन्दर ही थी तो फिर क्यों कह रही हो आ रही है?"
"अच्छा भई, बाहर से आ रही है।"
"कैसे?"
"मुझे नहीं पता। वो बताती नहीं है।"
"तो तुम पूछती क्यों नहीं हो?"
"अरे, बाबा चुप करो। मेरी तो नींद ही उड़ गई तेरी बातों से।"
"अच्छा तो उड़ कर आती है। जब पता है फिर क्यों कह रही थी नहीं पता? अच्छा अब नींद उड़ गई तो फिर कहानी सनाओ..." प्लूटो

दरवाज़े पर दुम

प्रभात

दस चूहे दरवाज़े पर आ
हिला रहे थे दुम
बिल्ली चीखी घर के अन्दर
कैसे आए तुम?

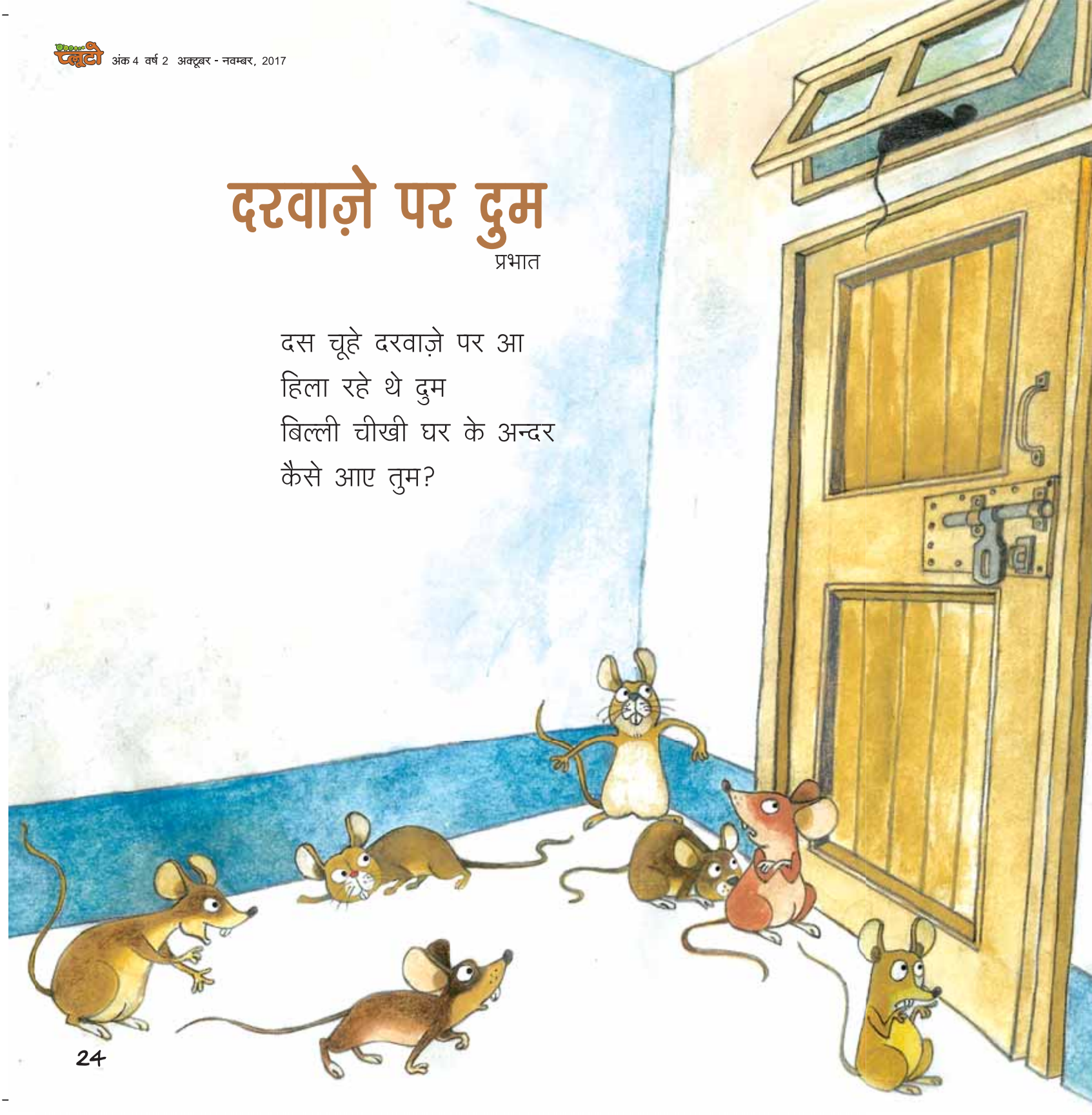

चित्रः समरेश चैटर्जी

लुहार और

एक लोककथा

भालू इंसान की भाषा नहीं जानता था। वह केवल इशारे समझता था। लुहार हाथ से इशारा करता था। भालू उस जगह हथौड़ा मार देता था।

एक बार लुहार की पीठ पर एक मक्खी बैठ गई। उसे उड़ाने के लिए लुहार पीठ पर हाथ ले गया। भालू ने वहीं हथौड़ा मार दिया।

हथौड़ा आते देख लुहार दूर उछल गया। हथौड़ा ज़मीन पर पड़ा। ज़मीन में एक बड़ा-भारी गड्ढा हो गया। प्लूटो

चित्रः प्रोइती रॉय

यह कहानी विसेंट ने कवि प्रभात को सुनाई। और उन्होंने उसे माँजकर हमें सुनाई। तुम यह कहानी किसे सुनाओगे?

नानी

हर इतवार को नानी आती हैं
बिरयानी खाऊँगी वो फरमाती हैं
अम्मी साइकिल लेके जाती हैं
मुझे कैरियर पर बैठती हैं
लौटके हम फिर चौक से आते हैं
गोलगप्पे शेखू के खाते हैं
पापा अलसाए से उठ्ते हैं
हम चारों फिर किचन में जुटते हैं।

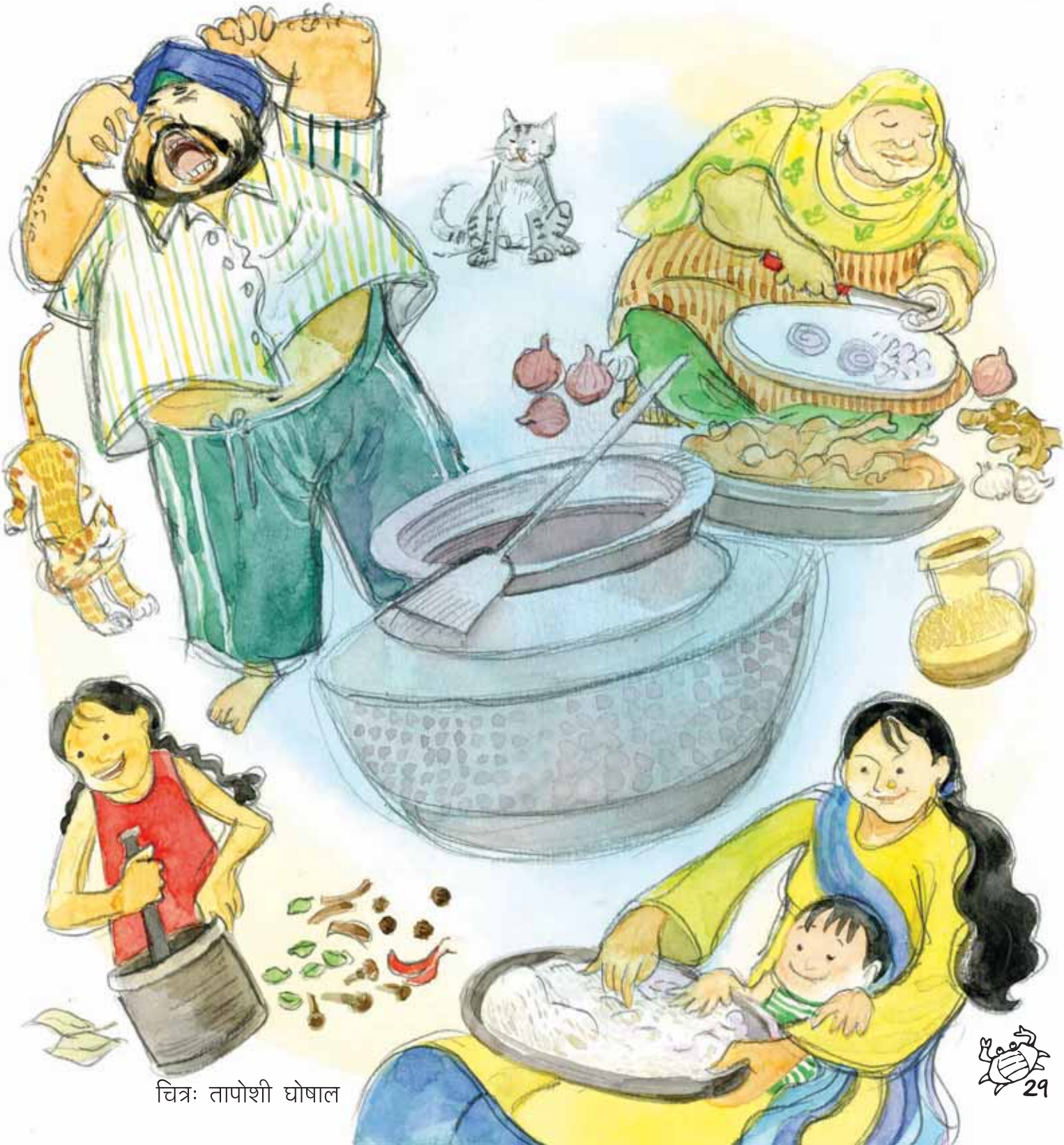

चित्रः तापोशी घोषाल

चटनियाँ

माँ ने कहा, पानी बरबाद मत करो।
तौ मैंने नल बन्द कर दिया।

-माँ ने कहा, समय बरबाद मत करो।

चित्र - प्रोइती राय

पलूटो इकतारा द्वारा विकसित

सम्पादनः सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

डिज़ाइन एवं चित्रः तापोशी घोषाल

आवरण चित्रः सुजाशा दासगुप्ता

मुद्रक तथा प्रकाशक संजीव कुमार द्वारा
तक्षशिला पब्लिकेशन-तक्षशिला एजुकेशनल सोसाइटी की इकाई के लिए
मल्टी कलर प्रेस, शेड नं. 92 डी.एस.आई.डी.सी., ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज़ 1, नई दिल्ली 110020 से मुद्रित एवं सी-404, बेसमेंट, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली 110024 से प्रकाशित

सम्पादकीय पताः
ई-7/413 एच आई जी, प्रथम तल
अरेरा कॉलोनी
भोपाल - 462016
फोन - 0755 2446002, 8989544927
ई मेलः pluto@takshila.net

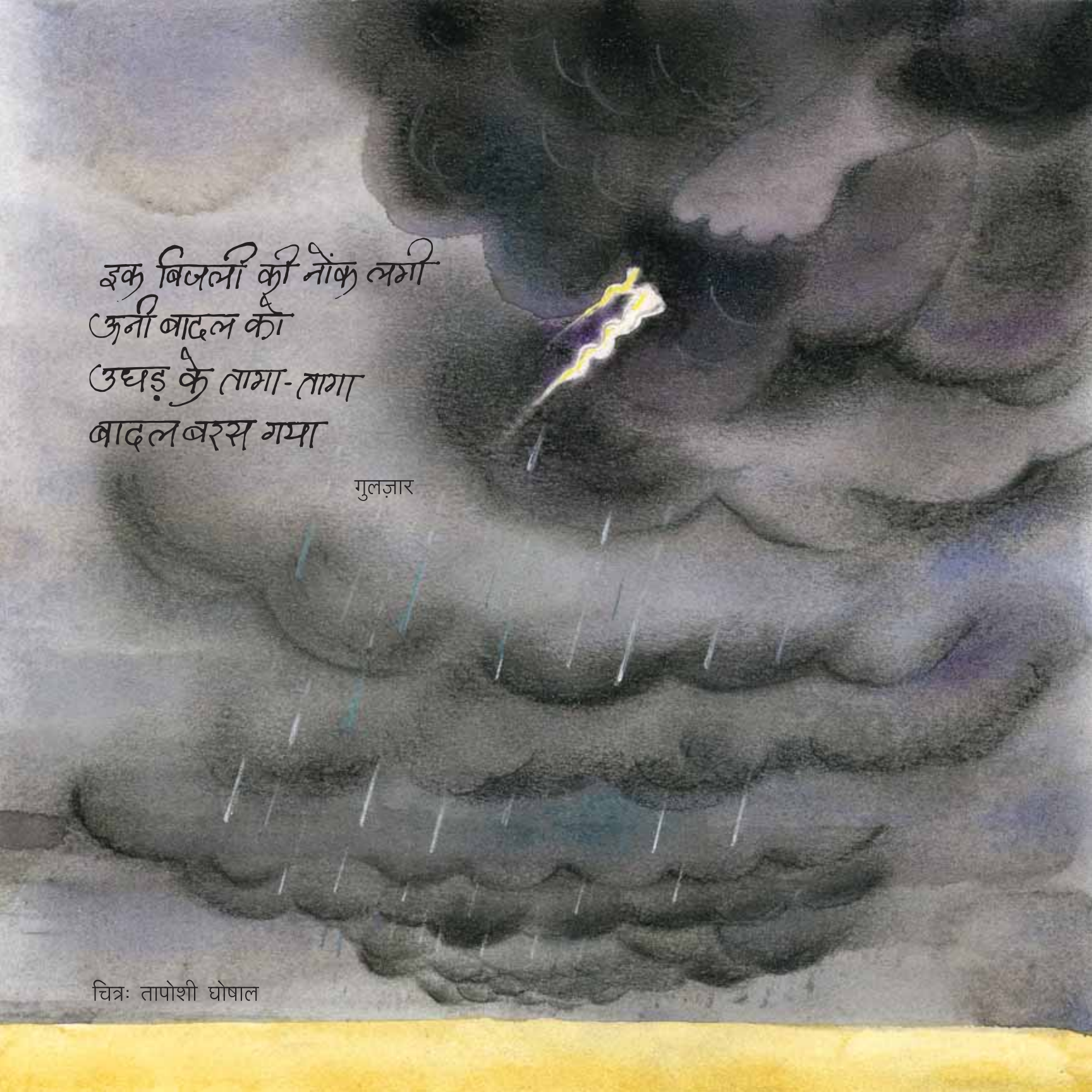

इक बिजली की नोंक लगी
ऊनी बादल को
उधड़ के तागा-तागा
बादल बरस गया

गुलज़ार

चित्रः तापोशी घोषाल

आर एन आई नं.DELHIN/2016/68357 दुमाही बाल पत्रिका

इक पत्ता

पद्मजा गुनगुन

इक पत्ता हवा में अटका
आकाश में क्यूँ न भटका
एक जगह पर रुका हुआ
मिट्टी में कैसे ना टपका
धूप पड़ी तो जाना ये तो
मकड़ी के जाले से लटका!

चित्र - भार्गव कुलकर्णी